संगोष्ठी विवरण
(Seminar Report)

विषय : 'भूमंडलीकरण तथा भाषा साहित्य की दिशाएँ'
विभाग : 'हिंदी विभाग'
तिथि : 18/01/2018
समय : प्रात: 10 से दोपहर 01 बजे तक

राज्यस्तरीय संगोष्ठी का प्रारंभ सर्वशक्तिमान खुदा की प्रशंसा में कुरआने-पाकीकी कुछ आयतें किरात के रुप में प्रस्तुत की गईं। उसके उपरांत नाते-पाक का नज़राना पेश किया गया। इस आशा के साथ कि संगोष्ठी को सफलता प्राप्त हो।

महाविद्यालय के प्राचार्य माननीय डॉ. जवाद खन सर तथा महाविद्यालय की आदरणीय कार्यकारिणी मंडल ने मुख्य अतिथियों, प्रतिनिधियों एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों तथा प्रतिभागियों का स्वागत किया।

तद्उपरांत प्राचार्य डॉ. जवाद खान सर ने राज्यस्तरीय संगोष्ठी की प्रस्तावना प्रस्तुत की।

संगोष्ठी के मुख्य वक्ता डॉ. कन्हैयालाल सर ने बीजभाषण किया। बीजभाषण में भाषा के महत्व को स्पष्ट करते हुए भूमंडलीकरण की पृष्ठभूमि को विशद रुप से समझाया। साहित्यकारों में अमीर खुसरो खड़ीबोली के प्रथम कवि के रुप में विख्यात हैं। फारस देश से भारत तक की यात्रा के उदाहरण द्वारा वैश्विक सजगता को दर्शाया। सूमित्रानंदन पंत द्वारा रेडियो के प्रसारण को 'आकाशवाणी' नाम दिया गया। विश्वस्तर पर हिंदी साहित्यकारों का बड़ा ही अमूल्य योगदान रहा है। वर्ग, धर्म, वर्ण आदि के भेदभाव को मिटाने का कार्य साहित्यकारोंने किया है। जिसे विश्वस्तर पर सराहा जाता रहा है। तुलसीदास द्वारा लिखित दोहा "माँगि के खैबो, मसीतको सोइबो, लैबोको एकुन दैवेको दोऊ"। माँगकर खाना और मस्जिद में सोना अर्थात मस्जिद में भेदभाव नहीं होता उसी प्रकार मनुष्य की जाति एक ही है। उसमें तनिक भेदभाव कवि को मान्य नहीं है। यह वैश्विक स्तर पर संदेश कवि पहुँचाना चाहते हैं।

अमीर खुसरो प्रथम मुस्लिम कवि थे जिन्होंने हिंदी, हिन्दवी और फारसी में एक साथ लिखा। जैसे - "गौरी सोवे सेज पर मुख पर डारे केस
चल खुसरो घर आपने रैन भई चहुँ देस।"

Scanned by CamScanner

निजामोद्दीन औलिया अमीर खुसरो के गुरु थे और वे सच्चे शिष्य थे। गुरु के महत्व में वैश्विक रुप का दर्शन कराता है। भाषा के अनुवादित साहित्य से भी पूरे विश्व को जोड़ने का सुगम कार्य किया जा रहा है। जिसके अंतर्गत भूमंडलीकरण का विशिष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। इस प्रकार बीजभाषण द्वारा भूमंडलीकरण तथा भाषा साहित्य की दिशाओं के विविध पहलुओं को उजागर करने का प्रयास किया गया।

इसके उपरांत उपस्थित प्रतिभागियों द्वारा आलेख प्रस्तुत किए गए। आलेख प्रस्तुतिकरण के इस भाग में संगोष्ठी के अध्यक्ष महोदय डॉ. बापू देसाई सर ने विशेषज्ञ के रुप में सहयोग एवं मार्गदर्शन किया। निम्नलिखित प्रतिभागियों ने आलेख प्रस्तुत किए जो इस प्रकार हैं -

1) आएशा कोकणी
2) निशा खान
3) अरबिया अन्सारी।
4) रुकसाना शेख
5) आकेफा खान
6) आमेना शेख

आलेख प्रस्तुतीकरण के पश्चात संगोष्ठी के अध्यक्ष माननीय डॉ. बापू देसाई सर ने अपने अमूल्य विचारों द्वारा मार्गदर्शन किया। डॉ. बापू देसाई सर ने कहा -
भूमंडलीकरण आज की भाषा शैली में साफ झलकता है। भारतवर्ष में 284 भाषाएँ और 1652 बोलियाँ विद्यमान हैं। हर एक देश की संस्कृति, भाषा अलग-अलग है। साहित्य में विविध देशों की संस्कृति का उल्लेख किया जाता है। वहाँ की भाषा के संवाद लिखे जाते हैं। उसके अर्थ हमें हमारी मातृभाषा में भी समझने हेतु दिए जाते हैं। विश्व स्तर पर विचारों का आदान-प्रदान आज हिंदी भाषा साहित्य में हो रहा है।

उसी प्रकार संयुक्त परिवारों में आज अलग-अलग जाति-धर्म-वर्ण के लोक एक-साथ रहते हैं। पारिवारिक पृष्ठभूमि भारतीय संस्कृति लिए होता है। लेकिन भाषा में विविधता पाई जाती है। भूमंडलीकरण की यह विशेषताएँ भारतीय परिवारों में आसानी से दिखाई देने लगी हैं। विविध त्योहारों एवं पर्व को सभी भारतीय मिल-जुलकर मनाते हैं। उदाहरण के तौर पर - गरबा, दांडिया, होली, दिपावली, न्यू इयर आदि इन सभी त्योहारों में भारतीय नागरिकों के साथ-साथ विदेशी नागरिक भी इसमें शामिल होते हैं। फिल्मों के गीत कई भाषाओं में लिखे एवं गाए जा रहे हैं। आज भावी पिढी भी कई भाषिक शब्दों का उच्चारण बडे आसानी से करती है। इंटरनॅशनल सेमिनार के आयोजन द्वारा भी भूमंडलीकरण के

Scanned by CamScanner

माध्यम से देश-विदेश की भाषा एवं संस्कृति को बढावा दिया जा रहा है। 'वसुधैव कुटुम्बकम' का नारा इसका प्रमाण प्रस्तुत करता है। आज विश्व छोटा गाँव हो गया है। इंटरनेट, मोबाईल, कम्प्यूटर विविध देशों के समाचार-वृत्त भूमंडलीकरण के उदाहरण हैं। आज व्यक्ति पुरे विश्व से संपर्क बनाए हुए है। जिससे शिक्षा-नीति को अवश्य ही बल प्राप्त होगा।

वर्तमान युग के मनोरंजन के साधनों में हिंदी फिल्मों का बड़ा योगदान है। हिंदी फिल्म 'हम आपके हैं कौन' विश्व की सबसे अधिक देखी जानेवाली फिल्म का दर्जा उसे प्राप्त है। पूरे विश्व को एक कडी में जोडने के लिए साहित्य तत्पर है। भूमंडलीकरण का समावेश पहले भी साहित्य में होता था और आज भी हो रहा है। प्रत्यक्ष रुप में आज इसका वैज्ञानिक रुप भाषा एवं संस्कृति को प्रभावित कर रहा हैं।

अध्यक्ष के भाषण के उपरांत उपस्थित प्रतिभागियों ने मुख्य वक्ता डॉ.कन्हैयालाल सर एवं अध्यक्ष डॉ. बापू देसाई सर से 'भूमंडलीकरण' इस विषय पर शेष चर्चा की, प्रश्न पूछे एवं विचार-विमर्श किया गया।

राज्यस्तरीय संगोष्ठी के बारे में शाहिन, फरहत इन छात्रों ने अपनी प्रतिक्रियाएँ व्यक्त की। जैसे ऐसी संगोष्ठियों का आयोजन महाविद्यालय में होता रहे एवं छात्रों को नए-नए विषयों के ज्ञान से अवगत होने का अवसर प्राप्त हो। इसलिए छात्रोंने महाविद्यालय को धन्यवाद दिया।

संगोष्ठी के समापन से पहले आभार ज्ञापन की औपचारिकता का कार्य हिंदी विभाग की प्राध्यापिका श्रीमती रेशमा खान द्वारा किया गया। आए हुए विद्वानों का एवं समस्त उपस्थितों का आभार व्यक्त किया गया। प्राचार्य, कार्यकारिणी मंडल, कार्यालयीन कर्मचारियों का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया गया।

तत्पश्चात आलेख प्रस्तुत करनेवाले प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र मुख्य वक्ता डॉ.कन्हैयालाल सर एवं संगोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. बापू देसाई सर के कर कमलों द्वारा प्रदान किए गए।

संगोष्ठी के अध्यक्ष की अनुमति से संगोष्ठी का समापन राष्ट्रगीत द्वारा किया गया। महाविद्यालय द्वारा आए हुए सभी अतिथियों एवं गणमान्य व्यक्तियों के लिए स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था भी की गई थी।

प्रा. रेशमा खान	NATIONAL SENIOR COLLEGE, College I.D. No. PU/NS AC/106/2007, Est. 2007-08, NASHIK	**डॉ. ज.ए. खान**
समन्वयक		**प्राचार्य**

Scanned by CamScanner